रात्रिक्लास 26-3-68 ओमशान्ति अपन को आत्मा समझ बाप की याद मेहो?

जिसको निश्चय हो गया है कि हम बाबा से ही पढ़ते हैं औरों को भी पढ़ाते हैं, अपनी राजधानी स्थापन करने लिए ही सभी कुछ करते हैं। यह सिर्फ तुम ही जानते हो। भारत पर इतनी ऊंच राजधानी स्थापन करते हैं। फिक्र तो होना चाहिए ना। बाप कहते हैं तुम कल्प2 कमाल कर दिखाते हो। तुम्हारा पार्ट है। कितनी खुशी होती है। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है। कोई अच्छी तरह समझा सकते हैं। इस समय जो भी अच्छे बच्चे गिने जाते हैं उन से भी और अच्छे बनेंगे। यह तो समझते हो हम नई दुनिया के मालिक बनेंगे। गाया जाता है स्तुति-निन्दा, मान-अपमान, दुःख-सुख सभी सन्तुष्ट हो चलता है वह अच्छा होता है। यहां स्तुति निन्दा दोनो ही है। वहां दोनो नहीं होती। सतयुग में बुरा काम कोई करते ही नहीं। इस समय ही यह सभी बातें सामने आती हैं। वहां तो यह बातें होती ही नहीं। मान-अपमान की बात ही नहीं। इसलिए राजयोग का ज्ञान भी है। जो यहां के हैं वह कहां से भी निकल आते हैं। निश्चय होता है तो फिर उमंग होता है। हर्षित भी बहुत रहते हैं। बाप भी खुश हैं तो बच्चे भी खुश हैं। अज्ञान काल में भी होता है, बच्चा अच्छा पढ़ता है तो बाप भी खुश होते हैं। न पढ़ते हैं तो समझते हैं कल्प पहले भी ऐसे ही पढ़े थे। लहर नहीं आती। फिर भी बच्चों को पुरुषार्थ कराया जाता है। दो ईंजन मिली हुई हैं ऊंचा बढ़ाने लिए।

यह है संगम। तुम बताते हो बाकी टाईम थोड़ा है। बाप आते ही हैं सृष्टि को बदलने लिए। सभी तैयारियां बीती रहती है। गाया जाता है बहुत गई थोड़ी रही .... तुम तो प्रैक्टीकल जानते हो टाईम थोड़ा है। रास्ता लेना है। आधा कल्प जो काम न कर सके वह इस जन्म में करना है, क्योंकि समझाने वाला भी मिला है। फिर माया भी पुरुषार्थ में बिघ्न डालती है। खुशी तो बच्चों को जरूर होनी चाहिए। हम बाप के बने हैं। बाप से नई दुनिया का वर्सा मिलता है। जब सतयुग था तो मुक्ति जीवन मुक्ति दोनो ही थी। नई दुनिया भी थी और शान्ति भी थी। तो ऐसी बिचार सागर मथन भी चलती रहनी चाहिए। तुम बच्चों का यही धंधा है। शरीर निर्वाह लिए तो कुछ करना न है। बुधि होती जावेगी। चोटी बढ़ती जावेगी। यहां के बच्चे जन्म लेते जावेंगे बाबा पास। अथवा प्रीत मरजीवा बनते जावेंगे। तुम्हारा झाड़ बुधि को पाता रहता है। तुम बहुतों का कल्याण करते हो। इसलिए पद भी पाते हो। फिर तुम्हारी पूजा भी होती है। हम ही पूज्य फिर हम ही पुजारी बनते हैं। बाबा समझा रहे हैं गीता पढ़ने से तुम नर से नारायण नहीं बनेंगे नहीं ज्ञान का तीसरा नेत्र ही दे सकते हैं। तुम देखते हो जो ऊंच बनते हैं उनकी ही भूतों की पूजा कर रहे हैं। ऐसी2 वन्डरफुल बात कल्प-कल्प हम सुनते हैं। जो कुछ स्पष्ट होता है वह फिर रिपीट होनी है। तुम बच्चों पास चक्र फिरता ही रहता है। यह हो सुनाते रहो। ज्ञान से सभी को वाकुफ करते रहते ही है। ड्रामा के प्लैन अनुसार। फिर भी बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। अथाह खुशी रहनी चाहिए। माया खुशी को कट कर देती है। नहीं तो तुम खुशी में उड़ पड़ो। बाकी यह जरूरी है बाप को याद करने से, पढ़ाई पढ़ने से खुशी होती है।

बाप देखते हैं, जानते हैं कैसे2 बच्चे पढ़ते हैं। कैसी चलन है। बाबा बतलाते भी रहेंगे। फलानी2 कैसी तीखी है। तुम कितनी ठंढी हो। तुम भी सिर्वस करो। महारथियों की, घोड़वासवारियों की, प्यादे की चलन को देखो। स्कूल में पिछाड़ी में बैठने वालों को लज्जा आती है। समझते हैं हम कम नम्बर्स से पास होंगे। बहुत बहुत मीठा बनना है। बाप बहुत मीठा है। प्यार का सागर है। बाप को याद करने से बड़ी खुशी होती है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा। आत्मा समझ बाप को और वर्से को याद करो। कितना सहज है। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का यह प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

बाप निष्ठा में जास्ती नहीं बैठते हैं क्योंकि बाप खुद ही कहते हैं चलते, फिरते तो हम बहुत ही खुशी से बाप को याद करता हूं। याद में कितना भी पैदल करो थकेंगे नहीं। जितना याद करते जावेंगे कला निकलती जावेंगी। तीर्थों पर पैदल जाते हैं कितना खुश होते है। वह सभी है भक्तिमार्ग। भक्ति हैरात। तुम्हारा अभी दिन होता है।